ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

जगत की उत्पत्ति

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी प्रकाशन

प्रकाशक - आर्य समाज, अजमेर

मूल्य 1.50

Scanned with CamScanner

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले द्वारा सम्पादित

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

के 15 पुष्प और उनके लेखक

भाग	नाम	लेखक का नाम	मूल्य
1.	ईश्वर एक है नाम अनेक	प्रो. बुद्धि प्रकाश आर्य	1.50
2.	आदर्श माता-पिता	प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु	1.00
3.	शिक्षा और चरित्र निर्माण	प्रो. भूदेव शास्त्री	1.50
4.	गृहस्थाश्रम का महत्व	आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव	1.00
5.	संन्यासी कौन और कैसे हो ?	रासासिंह विद्यावाचस्पति	1.00
6.	राज्य व्यवस्था	प्रो. प्रशान्त कुमार वेदालंकार	1.50
7.	ईश्वर और वेद	डॉ. सूर्यदेव शर्मा एम.ए., एल.टी. डी. लिट्.	1.50
8.	जगत् की उत्पत्ति	डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	1.50
9.	स्वर्ग और नरक कहां है ?	सिद्धान्त भास्कर पं. यशपाल आर्य बन्धु	0.90
10.	चौके चूल्हे में धर्म नहीं है ?	प्रो. देव शर्मा वेदालंकार	0.90
11.	हिन्दू धर्म की निर्बलता	प्रो. भवानी लाल भारतीय	1.00
12.	बौद्ध और जैन मत	पं. मन्जुनाथ शास्त्री	0.90
13.	वेद और ईसाई मत	श्री रामस्वरुप जी रक्षक	0.90
14.	इस्लाम और वैदिक धर्म	डॉ. श्रीराम आर्य	1.00
15.	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश	प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले	1.50

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित हैं। ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्यसमाज अजमेर के प्रधान प्रो. दत्तात्रेय जी आर्य ने किया। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 15/- रुपये है।

Scanned with CamScanner

ॐ

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला-भाग 8

जगत् की उत्पत्ति

लेखक :

डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश

भूतपूर्व प्रोफेसर (विज्ञान विभाग) इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सम्पादक :

दत्तात्रेय वाब्ले

भू. पू. प्रिंसिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज, अजमेर

प्रकाशक : आर्य समाज, अजमेर

शताब्दी वर्ष 1992

द्वितीय संस्करण

प्रतियाँ 2000

मूल्य 1.50 पैसे

Scanned with CamScanner

हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश

(1)

हमारे गुरु का आशीर्वाद, हमारे ऋषि का अमर विधान ।
मिटाकर जग का विषम विषाद, करेगा वही विश्व-कल्याण ।।
इष्ट फल देगा नित्य नवीन, कल्पपादप का पुण्याभास ।
करे वह असत्-विचार-विहीन, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ।।

(2)

निगम का आगम का अवतार, भव्य भावों का भूवि भण्डार ।
प्रेम के पथ का पारावार, ज्ञान का गुण का रम्यागार ।।
चमकते जिसमें रत्न अनेक, नित्य प्रति पाते विविध विकास ।
सत्य का सागर बस वह एक, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ।।

(3)

विविध पंथों का तामस तौम, भरा था भू पर भ्रम भरपूर ।
अखिल आच्छादित था वर व्योम, न कर सकता था कोई दूर ।।
गगन में हुआ ज्ञान विस्फोट, किया अज्ञान अँधेरा नाश ।
असत पर मारी भारी चोट, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ।।

(4)

किया द्रुत खण्ड-खण्ड पाखण्ड, चलाकर तेज तर्क का तीर ।
आक्रमण हुआ प्रभूत प्रचण्ड, दम्भगढ़ गिरा सहित प्राचीर ।।
विलखते हैं मतवादी आज, करें कैसे किसकी अब आश ?
असत् पर गिरा गर्ज कर गाज, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ।।

(5)

"सूर्य" में रहें रश्मियाँ सात, यहाँ चौदह पूरे उल्लास ।
"सूर्य" करता न प्रकाशित रात, सतत यह देता ज्ञान प्रकाश ।।
"सूर्य" पर छाते घन बरसात, ग्रहण में होता भारी ह्रास ।
किन्तु "सत्यार्थ" सदा अभिजात, हमारा प्रिय सत्यार्थ प्रकाश ।।

रचियता :
[**डॉ. सूर्यदेव शर्मा शास्त्री,** साहित्यालंकार एम. ए., डी, लिट्.,]
अजमेर

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

मानव की चन्द्र यात्रा

जगत की उत्पत्ति आधुनिक विज्ञान की खोज और अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है। अभी तक वैज्ञानिकों ने जो जानकारी प्राप्त की है, उसके द्वारा इस सम्बन्ध में हमारी अनेक पुरानी मान्यताएँ गलत सिद्ध हुई हैं। विशेषकर मानव कब और कैसे उत्पन्न हुआ ? यह पृथ्वी जिसमें हम रहते हैं, उसकी आयु क्या है ? सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और तारे आदि क्या हैं ? हम जो पृथ्वी, और सूर्य आदि देखते हैं उसके अतिरिक्त ब्रह्माण्ड में और कितने ग्रह, उपग्रह और तारे हैं ? इस बारे में अभी तक केवल काल्पनिक विवेचन किये जाते रहे हैं जिसमें कई अत्यन्त मूर्खतापूर्ण तथा निर्मूल सिद्ध हुये हैं। अन्तरिक्ष या आकाश के बारे में हमारी अनभिज्ञता के कारण यह केवल एक आश्चर्य और अनुमान की सृष्टि बन गये। उनमें ईश्वर या खुदा तथा देवी-देवताओं और फरिस्तों की रहने की हम कल्पना करने लगे थे किन्तु आज स्वयं मानव चन्द्रमा तक जाकर लौटा है। शनि जैसे अरबों मील दूर ग्रह के परीक्षण के लिये भी अन्तरिक्ष यान बन गये हैं। आज भी फलित ज्योतिष में विश्वास करने वाले असंख्य लोग इस अन्धविश्वास के शिकार हैं कि ग्रह और तारे आदि हमारे जीवन तथा भविष्य का भी निर्णय करते हैं। विज्ञान की इन खोजों के परिणाम आ रहे हैं उन्हें देख कर आश्चर्य होता है कि इन सब बातों के सम्बन्ध में वेदों तथा हमारे प्राचीनतम ग्रन्थों में जो विवरण मिलता है, वह किस प्रकार इन वैज्ञानिक तथ्यों से बहुत कुछ मिलता जुलता है। यह प्रसन्नता की बात है कि स्वयं भारत के वैज्ञानिकों ने भी हमारे प्राचीन गणितज्ञ भास्कर जैसे खोजकर्ताओं की स्मृति में पहले भास्कर और अब ऐपल जैसे कृत्रिम उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजकर आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में हमारे देश को ला खड़ा किया है।

Scanned with CamScanner

वैदिक विज्ञान

आधुनिक युग में सम्भवतः ऋषि दयानन्द ही एक ऐसे विचारक हुए हैं जिन्होंने न केवल यह घोषणा की कि हमारे वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है अपितु उनका अपनी प्रतिभा से जो अर्थ किया उनसे पृथ्वी की आयु, मनुष्य की उत्पत्ति, पृथ्वी और चन्द्रमा की परिक्रमा आदि के बारे में जो जानकारी उजागर की उसके आधुनिक वैज्ञानिक तथ्य बहुत कुछ नजदीक है। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के सम्बन्ध में अनेक निरर्थक आक्षेप किये हैं क्योंकि उनकी यह समझ में नहीं आ सकता था कि वेद जैसे प्राचीनतम ग्रन्थों में आधुनिक वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में ऐसी आश्चर्यजनक जानकारी कैसे सम्भव हो सकती है ? स्वामीजी ने बताया कि वेद में अणु और परमाणु अर्थात् ऐटम तक का विवरण है और यह बात पश्चिम के विद्वान् स्वीकार नहीं कर सकते थे, उनके विचार में तो वेद सिर्फ गडरियों के गीत या जादू टोना, मन्त्र-तन्त्र के वर्णन से भरे पड़े हैं।

दुर्भाग्य से हमारे पौराणिक पण्डितों ने भी वेद के ऐसे ही ऊलजलूल अर्थ किये हैं और उनमें मूर्ति पूजा, नर बलि, पशु हिंसा ही नहीं अपितु जात पाँत, छुआछूत, स्त्री और शूद्र को न पढ़ाने जैसी असामाजिक कल्पनायें भी कर डाली हैं। वस्तुतः विदेशी विद्वानों ने हमारे ही सायण, महीधर आदि वेद के भाष्यकारों के आधार पर वेदों की ऐसी दुर्गति की है।

वर्तमान पुस्तिका सत्यार्थ प्रकाश के सृष्टि उत्पत्ति विषयक आठवें समुल्लास पर आधारित है और उसके लेखक भी एक प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक अर्थात् डॉ. सत्यप्रकाश एम. एस-सी. डी-एस.सी जैसे विद्वान् हैं। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में विज्ञान के वरिष्ट प्रोफेसर रहे हैं और अब संन्यासी के रूप में स्वामी सत्यप्रकाश जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस पुस्तिका

Scanned with CamScanner

में मुख्यत: पृथ्वी की उत्पत्ति और उस पर मानव की सृष्टि कब और कैसे हुई इसका विवेचन है।

पृथ्वी की आयु

विद्वान् लेखक के अनुसार यह आयु एक अरब 96 करोड़ 29 लाख वर्ष से कुछ अधिक है। आश्चर्य इस बात का है कि ऋषि दयानन्द ने भी अपने सत्यार्थ प्रकाश में पृथ्वी की यही आयु लिखी है। अन्य धर्म ग्रन्थों में पृथ्वी और मनुष्य की उत्पत्ति केवल कुछ हजार वर्ष बताई गई है जब कि आज भी लाखों वर्ष पुराने अवशेष और कंकाल वैज्ञानिकों ने खोज निकाले हैं। विद्वान लेखक ने पृथ्वी की आयु निर्धारित करने की जो वैज्ञानिक पद्धति आज प्रचलित है उसका भी मनोरंजक विवरण दिया है। पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति कब हुई इसका भी विवेचन करते हुए लेखक ने यह बताया है कि वर्तमान वैज्ञानिकों के अनुसार भी पहला मनुष्य आज से कम से कम दस लाख वर्ष पूर्व अवतरित हुआ वर्तमान वैज्ञानिकों की यह धारणा अन्य धर्मों में मनुष्य उत्पत्ति के सम्बन्ध में दिये गये अनुमान सर्वथा गलत सिद्ध करती है।

दयानन्द की मान्यता

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द जी द्वारा सृष्टि उत्पत्ति और वेद का जो समय बताया गया है, वह एक वृंद छानवे करोड़, आठ लाख, बावन हजार, नौ सौ छहत्तर (1960852976) होता है, जो वर्तमान वैज्ञानिकों की धारणा के अपेक्षाकृत नजदीक है।

मानव की उत्पत्ति भी सृष्टि के प्रारम्भ में हुई ऐसी स्वामी जी की मान्यता है। वेदों में इस प्रकार की आश्चर्यजनक जानकारी होना इस बात का प्रमाण है कि वेद ही इश्वरीय ज्ञान की पुस्तक हो सकती है, जिसके समर्थन में ऋषि दयानन्द ने अनेक बुद्धिगम्य तर्क दिये हैं। उदाहरण के लिये

Scanned with CamScanner

यदि ईश्वर ने सृष्टि बनाई है तो उसकी आयु उसी के द्वारा निर्देशित की जा सकती है और जिसमें यह निर्देश हो वही ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है। ईश्वर द्वारा सृष्टि उत्पत्ति कैसे की गई, इस सम्बन्ध में भी जो पुरानी धारणायें हैं वे न आधुनिक विज्ञान के आधार पर और न ही तर्क और बुद्धि पर टिक सकती है इसके विपरीत स्वामीजी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों के अनादि और स्वतन्त्र अस्तित्व के त्रैतवादी सिद्धान्त के आधार पर ईश्वर द्वारा सृष्टि कैसे बनाई गई है इसका जो विवेचन किया है, वह बड़ा तर्क संगत है और बुद्धिगम्य है। आर्यावर्त अर्थात् भारत के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द ने जो दो ऐतिहासिक घोषणाएं की है वे भी इसी समुल्लास में हैं अर्थात् लोग विदेशी नहीं अपितु यहीं के मूल निवासी थे जहाँ से वे संसार में फैले न कि बाहर से यहाँ आये। उनकी दूसरी घोषणा स्वराज्य के समर्थन में थी जिसमें उन्होंने स्वदेशी राज्य के माता-पिता को समान विदेशी राज्य से भी श्रेष्ठ कहा।

दामोदर वाघले

सम्पादक

लेखक का परिचय

इस पुस्तिका के लेखक डॉ. स्वामी सत्य प्रकाश भू. पू. प्रोफेसर आर्य जगत् के जाने माने लेखक तथा प्रसिद्ध सन्यासी हैं। आप विज्ञान विभाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रह चुके हैं। आप के लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है।

Scanned with CamScanner

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय

हम सब मनुष्य इस धरती पर पैदा हुए। पृथिवी को हम अपनी माता कहते हैं, विस्तृत ब्रह्माण्ड में पृथिवी एक छोटा सा ग्रह है जो सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, पृथिवी की परिक्रमा चन्द्रमा करता है। पृथिवी के साथ और भी ग्रह हैं, जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं—बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि यूरेनस, नेप्टचून, प्लूटो आदि। पृथिवी की परिक्रमा जिस प्रकार चन्द्रमा करता है, उसी प्रकार अन्य ग्रहों की परिक्रमा करने वाले अनेक चन्द्र हैं। इन सबको मिला कर एक परिवार बनता है, जिसे हम सौर-परिवार कहते हैं। इस समस्त परिवार को नाभि पर प्रकाश और उष्मा का परमपूज्य सूर्य स्थित है। इसे हम आदित्य भी कहते हैं। इसी का एक नाम सवितृ (या सविता) भी है। समस्त ब्रह्माण्ड में एक ही सूर्य नहीं, अनेक सूर्य हैं. जो हमारे सूर्य से भी बड़े, अति प्रचण्ड, और अधिक उत्तप्त हैं। उन सूर्यों की अपेक्षा में हमारा सूर्य शीतल तारा ही कहलाता है। हम अमावस्या की रात्रि को इस विस्तृत ब्रह्माण्ड की छोटी सी झाँकी आकाश में अवश्य देख सकते हैं – कितने नक्षत्र, कितने सारे, सप्तर्षि मण्डल, ध्रुव तारा, दूध की नदी के समान बहने वाली आकाश गंगा और उसमें मोती की तरह बिखरे हुए चमचमाते हुए यह पिण्ड सृष्टि की अलौकिक शोभा हैं। यह है हमारा ब्रह्माण्ड, यह है हमारी सृष्टि, जिसकी गोद में हमारी यह पृथिवी छोटी बूंद के समान है। जिस ठोस स्तर पर हमारे पैर थमे हैं उसका नाम भूमि या पृथिवी है; खुले नेत्रों से अथवा अपनी शक्तिशालिनी

Scanned with CamScanner

दूरबीनों से हम आकाश में जहाँ तक जो कुछ भी ज्योतिर्मय देख सकते हैं, उसका नाम है द्युलोक। पृथिवी से लेकर द्युलोक तक जो कुछ भी है, उसका संयुक्त नाम द्यावा-पृथिवी या रोदसी है। पृथिवी की द्युलोक से जोड़ने वाले अथवा रिक्त समझे जाने वाले स्थान का नाम अन्तरिक्ष है। इसमें बादल आते और गड़गड़ाते हैं, इस स्थान में बिजली कौंधती है, इसमें आँधी और तूफान चलते हैं, इसमें होकर रेडियो और प्रकाश की तरंगे दूर-दूर जाती हैं। पानी की भाप से लदी और बिजली के चकाचौंध से भरपूर जो दिव्य शक्तियाँ अन्तरिक्ष के मार्ग से बराबर आती जाती हैं, उनका नाम वैदिक भाषा में मरुद् या मरुद्गण है।

छोटी सी पृथिवी का जीवन द्युलोक और अन्तरिक्ष की गतिविधियों से निरन्तर प्रभावित होता रहता है, इनका गम्भीर अध्ययन तत्त्ववेत्ताओं, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और ज्योतिर्विदों का अत्यन्त प्रिय विषय रहा है। ग्रह, नक्षत्र, आकाश के ये पिण्ड सभी अपने-अपने मार्ग पर परम व्यवस्था के अधीन निरन्तर चलते रहते हैं। इस व्यवस्था का कौन नियामक है, कौन सूत्रधार है, यह मनुष्य की परम जिज्ञासा है। सभी तत्त्वदर्शी एक परिणाम पर पहुंचते हैं—जो सत्ता इस व्यवस्था को अपने वश में रखती है--वह सर्वव्यापक है, सर्वत्र है, परम हितैषी है, सर्वशक्तिमान् है, सृष्टि के पूर्व भी थी, सृष्टि के समय भी है, सृष्टि के बाद भी रहेगी। सृष्टि में प्रतिक्षण परिवर्तित लाने वाली वह सत्ता स्वयं परिवर्तन रहित है--सब परिवर्तन होते हैं, पर वह एकरस विद्यमान हैं। वह संख्या में एक है, परिवर्तित होने वाले पिण्ड संख्या में अनेक हैं, संख्या में अनन्त

Scanned with CamScanner

। उस निश्चल सत्ता है सृष्टि निरन्तर चलायमान हो रही है। इसका नाम ही जगत् है, जो परिवर्तनशील है।

इसी आशय को यदि हम ऋग्वेद के शब्दों में चित्रित करें तो हम कहेंगे--

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ।।
(अ. 10 । 129 । 3)

आश्चर्य और विस्मय की बात है कि इतनी महान् सृष्टि न जाने कैसे उत्पन्न हो गयी, कौन इसको धारण किये हुए है, और न जाने किसमें विलीन हो जायगी। किसमें यह सामर्थ्य है कि इसके परम अध्यक्ष को पूरी तरह जाना जावे, उसी एक परमेश्वर में, उसी सर्वव्यापक में इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय है।

तम आसीत्तमसा गूढमग्रे प्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिमा जायतैकम् ।।
(ऋ. 10 । 129 । 3)

एक समय था, जब सूर्य न था, दिव्यलोक न था, अन्धकार ही अन्धकार था। उस घोर अन्धकार में कारणरूप प्रकृति अपनी मूल अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में थी। उसी में से जगन्नियंता प्रभु ने इस सृष्टि के वर्तमान रूप का अविर्भाव किया

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदा धार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।
(ऋ. 0 । 121 । 1)

Scanned with CamScanner

जब यह व्यक्त सृष्टि न थी, उस समय हिरण्यगर्भ नाम से प्रसिद्ध परमात्मा था—उनके गर्भ में ही समस्त प्रकृति थी. परमात्मा की चेतना से प्रेरित होकर इस प्रकृति से समस्त सृष्टि का बनी--चेतन और अचेतन सृष्टि। वह परब्रह्म ही इस सृष्टि का एक मात्र पति अर्थात् रक्षक और स्वामी था। उसी से सृष्टि उत्पन्न हुई, और वही अकेला अपनी सामर्थ्य से पृथिवी से लेकर द्युतक के समस्त लोकलोकान्तरों को धारण किए है। उसी आनन्ददाता सुखस्वरूप परमात्मा के प्रति हम अपना आत्मसमर्पण करें।

प्रवाह से अनादि विराट् सृष्टि

कोई समय न था जब परमात्मा सृष्टिकर्त्ता न था। वह सदा से ही सवितृ (सविता) है, क्योंकि उससे समस्त सृष्टि प्रसवित हुई है। वह सदा से प्रजापति है। वर्तमान सृष्टि से पहले भी सृष्टि थी। इस सृष्टि का अन्त किसी न किसी दिन होगा ही, क्योंकि बनी हुई है, प्रतिक्षण इसमें परिवर्तन होता है, इसी अर्थ में इसे गतिमान कहते हैं, इसे जगत् भी इसीलिए कहा जाता है, सृजन के अनन्तर विकास, विकास के अनन्तर ह्रास और प्रलय इस सृष्टि का शाश्वत स्वभाव है।

हमारी इस विराट् सृष्टि के भीतर अनेक सूर्य, अनेक आकाश गंगायें, अनेक ग्रह-उपग्रह नक्षत्र और छोटे-बड़े ठण्डे और गरम, चमकीले और मन्द वामन--और दानव आकृति के तारे हैं। इस विराट् सृष्टि का आरपार नहीं। किसी को इस विराट् सृष्टि का पूर्ण प्रत्यक्ष नहीं है। सृजन, विकास और प्रलयन सृष्टि का स्वाभाविक गुण है, और ये सब प्रक्रियायें

Scanned with CamScanner

अस्त-व्यस्त रूप से लक्ष्यहीन और उद्देश्यहीन नहीं हो रहीं। सृष्टि, विकास और प्रलयन ये तीनों किसी विशाल परिपक्व, उद्देश्यपूर्ण और कल्याणमय योजना के अंग हैं, सांख्यदर्शन में इसी को 'संघात परार्थत्वात्' कहा गया है। सृजन प्रलयन के लिए है, और प्रलयन नवीन सृजन के लिए है। यह क्रम शाश्वतकाल से (अनादिकाल से) चला आ रहा है, और शाश्वत काल तक (अनन्तकाल तक) चला जाएगा। एक उदाहरण से हम इस बात को समझ सकते हैं। भूमि के भीतर कुशलता से बोया गया बीज गलता और सड़ता है लगता है कि नष्ट हो रहा है, और उसकी इसी प्रक्रिया में से अंकुर का निकल आता है। बीज का गलना उसकी **प्रलय है**, अंकुर का निकलना पेड़ की सृष्टि का आरम्भ है। महती प्रक्रिया के ये दोनों आयोजनापूर्ण कल्याणमय अंग हैं।

इसी आशय को हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार प्रकट करते हैं—प्रत्येक सृष्टि का आदि या प्रारम्भ भी है और निश्चय पूर्वक उसका अन्त भी होगा। और अन्त होने के अनन्तर फिर सृष्टि बनेगी। सृष्टि के बाद प्रलय और प्रलय के बाद सृष्टि, और यह क्रम बराबर चलता रहेगा--दिन के बाद रात. उस रात के बाद दिन, और उस दिन के बाद फिर रात, और यह क्रम शाश्वत काल तक बराबर चलेगा। इसी की दार्शनिकों की भाषा में हम यह कहते हैं कि सृष्टि प्रवाह से अनादि है। प्रवाह से अनादि होने की इस भावना को वेद वाक्य में इन शब्दों में चरितार्थ भी किया गया है—"सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्"—जैसे इस कल्प में सूर्य और चन्द्र बने हैं, उनका यह बनना कोई नयी बात नहीं। सृष्टि बनती और बिगड़ती रहती है, और प्रत्येक सृष्टि में सूय, चन्द्र पृथिवी आदि के

Scanned with CamScanner

समान पिण्ड बनते हैं। याद रखना चाहिये कि प्रत्येक सृष्टि का अन्त है, प्रत्येक प्रलय का भी अन्त है, किन्तु सृष्टि और प्रलय का प्रवाह अनन्त और अनादि है।

वर्तमान जीवन और उसके अगले जीवन के बीच के द्वार को हम मृत्यु कहते हैं। जन्म और मृत्यु प्रवाह से अनादि है। मोक्ष के बाद जीवात्मा को फिर बन्ध अवस्था में आना पड़ता है। अतः जैसे जन्म और मृत्यु का एक चक्र है, उसी प्रकार का दूसरा एक बड़ा चक्र है बन्ध और मोक्ष का, स्मरण रखना चाहिए कि बन्ध और मोक्ष भी प्रवाह से अनादि है। बन्ध और मोक्ष का बड़ा चक्र है, और इस चक्र के अन्तर्गत जन्म और मृत्यु का चक्र है। प्रलय और सृष्टि यह बड़ा चक्र है और इस सृष्टि के अन्दर दिन और रात का छोटा चक्र है। विराट् सृष्टि के भीतर न जाने कितनी छोटी सृष्टियाँ हैं।

मनुष्य इस भूमि का प्राणी है 'द्यौर्मे पिता पृथिवी माता" दिव्य प्रकाश मेरा पिता और पृथिवी मानो मेरी माता है। भूमि सौर-परिवार का एक पिण्ड है। हमारे सौर-परिवार का प्रारम्भ उस दिन से होता है, जिस दिन से पृथिवी सूर्य से छिटक कर अलग हुई। समय की उस अवधि को जितने में सौर-परिवार का कोई भी ग्रह सूर्य की एक परिक्रमा लगा लेता है, हम वार्षिक भ्रमण का समय मानते हैं। पृथिवी 360 दिनों में सूर्य कि एक चक्र परिक्रमा लगाती है। एक दिन का नाम अहोरात्र है। जितने समय में पृथिवी की अपनी धुरी पर एक परिक्रमा हो जाता है, उसे एक अहोरात्र का काल माना जाता है।

Scanned with CamScanner

कुछ ग्रहों और उनके कुछ उपग्रहों का ज्ञान प्राचीन भारतीय ज्योतिषियों को भी था, किन्तु आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने यूरेनस जुपिटर और प्लूटो का भी पता लगाया। अथर्ववेद में 27 के लगभग नक्षत्रों का भी उल्लेख है। कुछ नक्षत्र तो दो या अधिक ज्योतिर्पिण्डों के युग्म हैं, जैसे पूनर्वसू, अश्विनौ आदि। प्रकाश में सूर्य समान दिव्य आलोक से सम्पन्न पिण्ड हैं। धूमकेतु अथवा पुच्छल तारे भी कभी-कभी आकाश में दिखायी दे जाते हैं, और उल्कापात तो सदा ही अंधेरी रात के समय देखा जा सकता है। यह है हमारी विराट् परिवर्तनशील सृष्टि, जिसका रूपक के रूप में ऋचाओं में बहुधा वर्णन है। उस ज्येष्ठब्रह्म की आँखें सूर्य चन्द्र के समान हैं, पृथिवी जिसका पाद या चरण है, अन्तरिक्ष में बहता हुआ वायु जिसका प्राण है। अग्नि जिसका मुख है—आदि-आदि।

हमारे शरीर का स्वयं बनना, बढ़ना और जीर्ण होना चमत्कार पूर्ण रचना है। माता की कोख में पिता के वीर्य से गर्भ स्थापित होता है, प्रारम्भ में बिन्दु के समान, और फिर बढ़ने लगता है—नौ महीने के बाद बच्चा माँ के पेट के बाहर आता है, उस समय इसके शरीर में अंग प्रत्यंग, ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ विकसित होने लगती हैं। उचित आहार और पोषण प्राप्त करने पर बच्चा (शिशु) बालक बनता है, बालक कुमार होता है, फिर किशोर, फिर नवयुवक, फिर युवक आगे चलकर प्रौढ़ होता है—स्वयं बच्चे पैदा करने के योग्य हो जाता है प्रौढ़ व्यक्ति वृद्ध होता है, फिर एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है—इन्द्रियाँ निश्चेष्ट हो जाती हैं, प्राण निकल जाते हैं और हृदय की धड़कन बन्द हो जाती है। मृतक शरीर जला दिया जाता है। यह भी हमारी एक प्रकार की सृष्टि है।

Scanned with CamScanner

लघु प्राणियों की भी अनगिनती संख्या है, जो कुछ वर्ष ही, कुछ मास ही, और कोई-कोई तो कुछ क्षण ही जीवित रहते हैं, और अल्पकाल में ही उनका शैशव, यौवन और वार्धक्य समाप्त हो जाता है। कुछ तो ऐसे शरीरधारी हैं, जो एक ही योनि में तीन-तीन योनियाँ बदल डालते हैं। अभी प्यूपा हैं फिर लारवा हैं और फिर कीट बन गए। हमारी सृष्टि बड़ी निराली है। विराट् सृष्टि के भीतर असंख्य छोटी-छोटी सृष्टियाँ हैं, जिनमें रचना, पोषण और प्रलय निरन्तर चलती रहती हैं। छोटी-छोटी प्रलयों के सामने भूमि की प्रलय महाप्रलय कहा जाती है। भूमि और ग्रह और उपग्रहों की प्रलयों की तुलना में सौर परिवार की प्रलय महाप्रलय है। इन सबकी प्रलयों की तुलना में नीहारिकाओं और आकाश गंगाओं की प्रलय महाप्रलय है। वस्तुतः समस्त ब्रह्माण्ड की महाप्रलय कभी नहीं होती। परमात्मा अनादिकाल से है, प्रकृति अनादिकाल से है, परमात्मा अनादिकाल से सृष्टा है—उसके सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन के इस सूत्र की सत्यता है—"जन्माद्यस्य यतः" (सदा ही वह सृष्टा, पोषक, और प्रलयकारक है)। कभी ऐसा कोई काल न था, जब वह न था, और कहीं न कहीं उसकी सृष्टि न थी, और कहीं न कहीं उसकी सृष्टि की प्रलय न थी। देश और काल दोनों की अपेक्षा से सृष्टि प्रवाह से अनादि है। "सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्" के समान श्रुतियों का यही अभिप्राय है।

पिता के वीर्य में जीवात्मा का प्रवेश और माता के गर्भकण में उसका अवतरण और फिर मनोमय, प्राणमय और अन्नमय के कोशों का विकास-सभी रहस्यमय हैं। इतने सरल नहीं, जितना हम समझते हैं—ज्ञान विज्ञान की मानव भाषा में

Scanned with CamScanner

विकास क्रम का पूर्णचित्रण करना असम्भव है। बीज से अंकुर, अंकुर से तना, तने से वृक्ष का शरीर, उससे फूल और फिर फल और फल में फिर बीज-यह तो अतिसूक्ष्म विकास की अत्यन्त भोंडी और अपूर्ण व्याख्या है। पर इतने से ही हमें सन्तोष रखना चाहिए और इसी प्रकार सांख्य दर्शन का विकास क्रम भी अपूर्ण है, फिर भी साधारण तत्त्ववेत्ता को उसी से सन्तोष करना चाहिए।

प्रकृति का एकमात्र गुण उपादानत्व है अर्थात् यदि कोई चेतन सत्ता इसके माध्यम से कुछ बनाना चाहे तो यह विकृत हो सकती है। उद्देश्यपूर्ण विकृतियों के क्रम से सृष्टि बनती है। सृष्टि बनाने के लिए किसी न किसी बुद्धिमान् चेतन सत्ता की आवश्यकता होगी। यह चेतन सत्ता सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् होनी चाहिये, क्योंकि इतनी विशाल और साथ ही साथ इतनी सूक्ष्म सृष्टि को बनाना कोई साधारण काम नहीं है। यह चेतन सत्ता सृष्टि की रचना में निमित्त कारण मानी जाती है (जैसे मिट्टी से घड़ा बनाने के लिए एक चेतन कुम्भकार) मूल प्रकृति (कारण) सूक्ष्म रूप प्रकृति सृष्टि रचना का उपादान कारण है, जैसे घड़ा बनाने के लिए मिट्टी। यह सृष्टि हमारे लिए बनायी जा रही है, इसके लिए हमारे ऐसे जीव सृष्टि रचना में साधारण कारण माने जाते हैं। जहाँ कोई भी व्यवस्थापूर्वक रचना होगी। वहाँ ये तीन कारण परोक्ष या प्रत्यक्ष में बराबर विद्यमान रहेंगे-निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण। परमात्मा निमित्त कारण है। सृष्टि रचना करने से इसमें स्वयं कोई परिवर्तन नहीं होता। फिर भी यह स्मरण रखना चाहिए कि इसके बनाने से ही चीजें बनती है, अगर यह बनाने की इच्छा (ईक्षण) न करें, बनने

Scanned with CamScanner

की प्रेरणा न दे, तो कुछ भी नहीं बन सकता। उपादान कारण वह है, जिनके न होने मे कुछ भी नहीं बन सकता। प्रकृति ही अवान्तर रूप होकर बनती और बिगड़ती है। परमात्मा का सारा कार्य उसकी स्वाभाविकी बल क्रिया से होता है। यह सृष्टि जीवनमात्र के भोगोपभोग के लिए हैं। सृष्टि इसी प्रयोजन से बनायी जाती है। परमात्मा की यह कल्याणमय भावना ही सृष्टि की रचना का प्रयोजन है। सृष्टि रचना के प्रत्येक चरण में जीवों के कल्याण की भावना निहित है।

जीवात्मा भी, विशेषतया मनुष्य की योनि में, छोटे-छोटे कार्यों के लिए छोटे-छोटे निमित्त कारण हैं। गेहूँ प्रभु तैयार करता है, गेहूँ को पीस कर आटा बनाना, और उससे तरह-तरह के पकवान तैयार करना यह शरीरधारी जीवों का काम है धरती-सूरज प्रभु ने बनाकर दिए, झोपड़ियाँ और भव्य मकान मनुष्य ने बनाये। ब्रह्माण्ड की रचना में निमित्त कारण प्रभु है, पर झोंपड़ी बनाने में, छोटी-छोटी सिलाई, बुनाई की मशीनें तैयार करने में निमित्त कारण हम हैं, इसी बात को स्पष्ट शब्दों में महर्षि दयानन्द ने इन शब्दों में कहा है—"निमित्त कारण दो प्रकार के होते हैं एक--सब सृष्टि को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने, तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा। दूसरा-परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विधि कार्यान्तर बनाने वाला साधारण निमित्त कारण जीव।

ईश्वर की समस्त शक्तिमत्ता, सर्वज्ञता उसकी निजी और स्वाभाविक है। जीव की निजी चेतनता केवल इतनी है कि वह प्रकृति से सम्बद्ध होने पर वृद्ध अवस्था में आ जाता है, और प्रकृति से उत्पन्न इन्द्रियों से ज्ञानोपार्जन भी करता है,

Scanned with CamScanner

सुखी-दुःखी भी होता है और कम, अकम तथा दुष्कर्म करने की प्रेरणायें भी पाता है। परमात्मा प्रकृति से बिलकुल प्रभावित नहीं होता, प्रकृति को अवस्थान्तरित करके इसके निमित्त कारणत्व की अभिव्यक्ति होती है। प्रकृति में उपादानत्व न हो तो प्रभु सृष्टि-रचयिता हो भी नहीं सकता। जीवों के प्रति प्रभु के न्याय एवं दया की समस्त व्यवस्था प्रकृति के इस उपादानत्व पर ही निर्भर है।

कार्यावस्था से कारणावस्था में लीन हो जाने का नाम ही प्रलय है। छोटी-छोटी प्रलयें तो बहुत-सी होती हैं। शक्कर जलभुन कर पानी की भाप और कार्बन डाइऑक्साइड में परिणत हो जाय, यह भी छोटी-सी प्रलय है। घड़ा फूटकर मिट्टी बन जाय, यह भी छोटी-सी प्रलय है। आग में जला कर देह को भस्मान्त कर दें, यह भी प्रलय है। किन्तु यह सब छोटी प्रलयें हैं। महा-प्रलय वह अन्तिम प्रलय है, जब कोई भी पदार्थ अवस्थान्तरित होकर या सूक्ष्मीभूत होकर मूल प्रकृति की चरमावस्था में आ जाय, जब कभी किसी भी माता के गर्भ में जीव प्रविष्ट होता है, प्रभु वहां ही मूल प्रकृति से महत्-तत्त्व की रचना करते हैं—धीरे-धीरे क्रम से मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार और इन्द्रियों आदि का निर्माण होता है।

मेरा प्रभु जब से है, और यह प्रकृति भी जब से है और जीव भी जब से है, कहीं न कहीं किसी न किसी प्रकार की सृष्टि अवश्य रही है—प्रभु शाश्वतकाल से ही सविता, प्रजापति हिरण्यगर्भ, ईश्वर अर्थात् सृष्टि रचयिता और सृष्टि का स्वामी रहा है। किसी स्थान विशेष पर ही प्रलय होती है। प्रलय और सृष्टि परस्पर सम्बद्ध हैं। यह कहा जा चुका है कि

Scanned with CamScanner

महा प्रलय का वास्तविक अर्थ अवस्थान्तरण से उत्पन्न कार्य रूप प्रकृति का अपने कारणरूप में वापस आना है।

यह ठीक है कि हमारे सौर-परिवार में धरती ही ऐसा ग्रह है जहां पर पशु, कीट-पतंग, पक्षी, जलजन्तु और मनुष्य का जीवन सम्भव है। इस विशाल ब्रह्माण्ड में न जाने कितने आदित्य या सूर्य हैं, और न जाने कितने सौर-परिवार। कोई नहीं कह सकता कि वहां किस प्रकार का जीवन है। धवी जैसे अनेक सैकड़ों पिंड होंगें, जिनमें उसी प्रकार के जीवन की सम्भावना है जैसी कि हमारी पृथिवी पर। किन्तु यह स्पष्ट है कि जीवन वाले ऐसे पिंड हमारी पहुंच से बाहर हैं। यदि हम प्रकाश की गति से चलें, तो भी सौ वर्ष की आयु में हम इन पिंडों पर नहीं पहुँच सकते। साधारणतया पृथिवीलोक के हम प्राणी निकट में ही अपना ऐसा परिवार ढूंढना चाहते हैं, यह हमारी संकीर्णता और अज्ञानता है। 4-5 अरब वर्ष की आयु के सौर-परिवार में मनुष्य या पशु सर्वत्र सदा से नहीं रहे। आज भी धरती पर मनुष्य थोड़े ही स्थलों में हैं। दो-चार अरब वर्षों की आयु की इस पृथिवी पर आधी में अधिक आयु तो ऐसी निकल गयी, जब पृथिवी पर कोई जीव-जन्तु रह ही नहीं सकता था, हमारी पृथिवी मूलतः सूर्य का एक भाग थी—वह सूर्य से छिटकी उसके पहले और ग्रह छिटके और क्रमशः हमारा एक पृथक् सौर-परिवार बन गया। पृथिवी की आयु की गणना का समय उस समय से आरम्भ करना चाहिए जब उसका पिंड सूर्य के पिंड से अलग छिटका, घनीभूत गैसों के गरम पिंडों का ठण्डा होते-होते करोड़ों वर्ष लगे। करोड़ों वर्षों के बाद फिर धरती इस योग्य हुई होगी कि उस पर जल वाले बादल अभिव्यक्त हुए हों और बरसे हों—समुद्र बने

Scanned with CamScanner

हों, और पृथ्वी का भू-भाग वनस्पतियों के योग्य बना हो। यह सारी कहानी लाखों और करोड़ों वर्षों की कहानी है। वनस्पतियों के बाद तरह-तरह के प्राणियों का प्रादुर्भाव और फिर अन्त में मनुष्य और उसके परिवार के चार ग्राम्य पशुओं का परिवार आया—अश्व, गो अज और अवि। यह सारा विकास दस-पांच लाख वर्षों में नहीं होता अतः यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि पृथ्वी की आयु 2-4 अरब वर्ष के लगभग की मानी जाय, तो धरती पर ग्राम्य पशुओं का अवतरण मुश्किल से 30-40 लाख वर्ष पुराना होगा—किसी भी प्रकार एक करोड़ वर्ष से पुराना तो माना ही नहीं जा सकता। पर यह सब अनुमान है। मनुष्य निर्मित इतिहास का आरम्भ बिन्दु कहाँ है—इसका तो कोई निर्भ्रान्त प्रमाण हो ही नहीं सकता। दार्शनिक दृष्टि से ऐसे प्रमाण की कोई आवश्यकता है भी नहीं। हमारे कुछ ऋषियों और मनीषियों ने ऐसे कतिपय प्रश्न उठाये और अपने चिन्तन के अनुसार इनके कुछ उत्तर भी दिए। किन्तु वस्तुतः इतिहास इस सम्बन्ध में मौन ही रहेगा। इस पृथिवी पर जाने कितनी बार जलथल का विनिमय हुआ। जहाँ आज समुद्र है, वहाँ धरती थी, जहाँ आज धरती है वहाँ पहले पानी था। जहाँ आज गरम स्थल हैं, वहां किसी समय हिमयुग था—न जाने कितने हिमयुग धरती पर आये चले गये। न जाने कितनी बार धरती फटी और जंगल के जंगल पत्थर की शिलाओं के बीच में समा गए और कोयले की खानें बन गए—मिट्टी के तेल के प्रवाह बन गए।

प्रारम्भिक सृष्टि के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द ने कतिपय प्रश्न उठाये और उनके उत्तर भी दिए। कुछ प्रश्न मौलिक

Scanned with CamScanner

और सैद्धान्तिक हैं, और उनके सम्बन्ध में स्वामी जी की विचारधारा मौलिक भी है और बुद्धिग्राह्य भी। हम कुछ प्रश्नोत्तर यहाँ देते हैं।

प्रश्न—मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई या पृथ्वी आदि की ?

उत्तर—पृथिवी आदि की। क्योंकि पृथिवी आदि के बिना मनुष्य की स्थिति और पालन नहीं हो सकता।

प्रश्न—सृष्टि की आदि में एक या अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वा क्या ?

उत्तर—अनेक। क्योंकि जिन जीवों के कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होने के थे उनका जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है। क्योंकि "मनुष्या ऋषञ्च ये। यततो मनुष्या अजायन्त"—यह यजुर्वेद में लिखा है। इस प्रमाण से यही निश्चय है कि आदि में अनेक अर्थात् सैकड़ों सहस्रों मनुष्य उत्पन्न हुए। और सृष्टि में देखने से भी निश्चित होता है कि मनुष्य अनेक माँ-बाप की सन्तान हैं।

प्रश्न—आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की बाल्य युवा व वृद्धावस्था में सृष्टि हुई थी या तीनों में ?

उत्तर—युवावस्था में। क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनके पालने के लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते। और वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि न होती। इसलिए युवावस्था में सृष्टि की है।

प्रश्न—मनुष्य की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई ?

उत्तर—त्रिविष्ट में अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न—आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक ?

Scanned with CamScanner

उत्तर—एक मनुष्य जाति थी। पश्चात् "विजानीह्यार्यान्ये च दस्यव : यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठों का नाम आर्य विद्वान् देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। उत शूद्रे उत आर्ये (ऋग्वेद) आर्यों में पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए, द्विज विद्वानों का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य (अनाड़ी) हुआ।

प्रश्न--फिर वे यहीं (भारत) में कैसे आये ?

उत्तर—जब आर्य और दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव, और अविद्वान्, जो असुर थे, उनमें सदा लड़ाई—बखेड़ा होने लगा। जब बहुत उपद्रव होने लगे, तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। तब से इस देश का नाम आर्यावर्त्त पड़ा।

जिस समय आर्य भारत भूमि पर आये, यहां और कोई मनुष्य जाति नहीं रहती थी क्योंकि मनुष्य जाति का प्रथम अवतरण त्रिविष्टप में ही हुआ। जो लोग कहते हैं कि द्राविड़ जाति के व्यक्ति इस देश के आदिवासी थे, ऐसा विचार पुराने मनीषियों का नहीं है। भारत में आर्य और दस्यु दोनों ही बाहर से आये—त्रिविष्टप से, दोनों की आदि सृष्टि का स्थान ए है।

भारत में बस जाने के अनन्तर भारत देश और भारतीय सभ्यता का विशेष विकास हुआ। आर्यावर्त्त कहे जाने से पूर्व इस देश का कोई नाम न था। यह स्मरण रखना चाहिए कि आर्य लोग ईरान से नहीं आये। आर्य लोग ईरान में जाकर बाद में बसे और वैदिक भाषा और संस्कृति को वहां ले गए। ईरान में वैदिक भाषा संस्कृति पहुँची, और धीरे-धीरे दस्युओं के

Scanned with CamScanner

प्रभाव से उसमें विकृतियाँ भी उत्पन्न हुई—आर्यों और ईरानियों में ईर्ष्या और द्वेष भी उत्पन्न हो गए—दोनों की संस्कृतियां धीरे-धीरे अलग भी होने लगीं।

आर्यों का प्रारम्भिक काल वैभव का था, देशदेशान्तरों में आर्यों का चक्रवती राज्य था। पर भाग्य पलटा-आर्यों के परस्पर आलस्य, प्रमाद और परस्पर के विरोध के कारण आर्यों का आर्यावर्त्त में भी अखण्ड राज्य नहीं रह गया था-अन्य देशों में भी इनके राज्य छिन्न-भिन्न हो गए। आर्यावर्त्त पर भी विदेशियों के आक्रमण होने लगे। स्वामी दयानन्द ने दुःख भरे शब्दों में कहा है—"अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र, स्वाधीन और निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, सो भी विदेशियों द्वारा पादाक्रान्त हो रहा है कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासयों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मतमतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राच्य भी पूण सुखदायक नहीं।"

महर्षि दयानन्द ने ये वाक्य 1874 में लिखे थे। स्वदेशीय राज्य का यह पहला घोष था। 1947 में देश फिर से स्वतन्त्र हुआ-पर आलस्य, प्रमाद और परस्पर के विरोध आज भी हैं। उसका कटु परिणाम देश को अवश्य ही भोगना पड़ेगा।
राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।"

विशाल सृष्टि रचना के प्रश्न में कई प्रश्न और हैं, जिन पर भी महर्षि ने विचार किया। स्थूल पिण्डों की रचना सूक्ष्म कणों से होती है। इस सम्बन्ध में वैशेषिक दशन के आचार्य

Scanned with CamScanner

कणाद और प्रशस्तपाद के अनुसार स्वामी दयानन्द ने परमाणवाद का रूप संक्षेप में इस प्रकार रक्खा—

"सब से सूक्ष्म टुकड़ा, जो काटा नहीं जाता; उसका नाम परमाणु है। साठ परमाणुओं के मिले हुए का नाम अणु है। दो अणुओं को मिलाकर एक द्वयणुक बनता है (स्थूल वायु), तीन द्वयणुक का त्रसरेस बनता है (अग्नि), चार द्वयणुक का जल बनता है और पांच द्वयणुक की पृथ्वी। और इसी क्रम से मिलाकर भूगोल के अन्य पिण्ड बनते हैं। पुराने मनीषियों की इन दार्शनिक कल्पनाओं के आधार पर वर्तमान परमाणु-वाद की नींव पड़ी। आज रसायन शास्त्र और भौतिक शास्त्र को उत्तरोत्तर नवीनतम गवेषणाओं ने हमारे ज्ञान के क्षेत्र को बहुत विस्तृत कर दिया है। भारत और यूनान के देश में परमाणुवाद के सिद्धान्त को काल्पनिक रूप दिया गया। डाल्टन बॉयल आदि वैज्ञानिकों ने अणु और परमाणु के अन्तर का स्पष्टीकरण किया और तत्वों के व्यावहारिक सिद्धान्त की नींव डाली, तब से रसायन शास्त्र चरण उत्तरोत्तर बढ़ते चले आ रहे हैं। अनेक परमाणु का विखण्ठन भी सम्भव हो सका, और भौतिक पदार्थों के मूल-कणों के सम्बन्ध में नयी-नयी बातें ज्ञात हुई। आज हम उस युग में हैं जब परमाणुओं के विखण्डन की ऊर्जा को व्यावहारिक रूप दिया जा रहा है—परमाणु-बम और परमाणु भट्टियां (रिएक्टर) इसी के परिणाम हैं। विज्ञान हमें उत्तरोत्तर स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर ले जा रहा है। इसका हमें स्वागत करना चाहिए। स्वामी दयानन्द उन मनीषियों में अग्रदूत थे जिन्होंने आधुनिक विज्ञान और उसकी उपलब्धियों का स्वागत किया।

स्वामी दयानन्द ने विज्ञान का स्वागत मानव-कल्याण की

Scanned with CamScanner

दृष्टि से भी किया और पौराणिक अन्धविश्वासों से मुक्ति मिल सकेगी, इस दृष्टि से किया। हम कुछ प्रश्न इस सम्बन्ध में यहां उद्धृत करना चाहेगे, जिनकी विवेचना स्वामी दयानन्द ने की है।

प्रश्न—पृथिवी को धारण कौन करता है? कोई कहता है, कि शेषनाग अर्थात् सहस्रफन वाले सर्प के शिर पर पृथिवी थमी है कोई कहता है कि बैल के सींग पर. और कोई कहता है कि किसी पर नहीं, कोई कहता है कि वायु के आधार पर, कोई कहता है कि सूर्य के आकर्षण से खैंची हुई यह अपने ठिकाने पर स्थिर है। और कोई कहता है कि पृथिवी भारी होने से नीचे-नीचे आकाश में चली जाती है।

उत्तर—जो शेष सर्प और बैल के सींग पर पृथिवी को स्थिर बतलाता है, उसको पूछना चाहिए के सर्प और बैल के माँ-बाप के जन्म के समय किस पर थी? और सर्प और बैल आदि किस पर हैं।

बैल वाले मुसलमान तो चुप कर जायेंगे, पर सर्प वाले कहेंगे सर्प कूर्म पर, कूर्म जल पर, जल अग्नि पर, अग्नि वायु पर और वायु आकाश में ठहरा है। उनसे पूछना चाहिए कि ये सब मिलकर किस पर हैं? तो अवश्य कहेंगे कि ईश्वर पर।

जब उनसे कोई पूछेगा—शेष और बैल किसका बच्चा है? तो कहेंगे—कश्यप कद्रू और बैल गाय का। कश्यप मरीची, मरीची मनु, मनु विराट्, विराट् ब्रह्मा का पुत्र है—ब्रह्मा आदिसृष्टि का था। जब शेष का जन्म नहीं हुआ था, उसके पहले पाँच पीढ़ियों हो चुकी हैं, तब पृथिवी किसने धारण की थी? अर्थात् कश्यप के जन्म के समय पृथिवी किस पर थी तो कोई उत्तर न मिलेगा।

Scanned with CamScanner

वेद के प्रमाणों के आधार पर स्वामी दयानन्द का कहना है कि समस्त लोकलोकान्तरों का परमाधार परमात्मा ही है। 'शेष" और "उक्ष" शब्द वेद में क्रमशः परमात्मा और सूर्य के लिए ही हैं, जिनको लोगों ने भूल से सर्प और बैल समझ लिया था। परमात्मा को शेष इसलिए कहते हैं, कि वह सृष्टि की प्रलय के बाद भी (अर्थात् जब सृष्टि छिन्न-भिन्न हो जाती है) शेष रहता है, पहले जैसा ही बचा रहता है। जब सृष्टि नहीं थी—तब भा वह ऐसा ही था। वर्षा सूर्य के कारण होती है अतः सूर्य को पृथिवी द्वारा सेचन करने वाला कहा गया है। वैसे यह भाव "उक्ष" शब्द द्वारा व्यक्त होता है (उक्ष या वृषभ शब्द का एक अर्थ बैल भी है)। अतः सूर्य (या उक्ष) को हम पृथिवी का धारण-पोषण करने वाला मान सकते हैं—वेद का मंत्र है "उक्ष दाधार पृथिवीमुतद्याम्"। वस्तुत पृथिवी और द्युलोक सबका धारण करने वाला प्रभु ही है—सदाधार पृथिवीमुतद्याम्।

इसको भावना है कि प्रभु की व्यवस्था से ही लोक लोकान्तर आकाश में अपने अपने मार्गों पर स्थिर हैं और नियमानुसार परिभ्रमण कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द एक वेद मंत्र उद्धृत करते हैं—

आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिपश्यन्॥

(यजु. 33।43)

अर्थात् सविता या सूर्य अपनी किरणों द्वारा समस्त लोकों को प्रकाशित करता और दिखाता है। वह अपनी आकर्षण शक्ति से सब ग्रहों को अपने अनुशासन में रखता है। उसके कारण औषधियों में अमृतरस उत्पन्न होता है। सूर्य अपने

Scanned with CamScanner

आकर्षण से सब लोकों को अपने अपने स्थान में रखता है। वस्तुतः यह सब प्रभु की ही व्यवस्था है।

यह बात सर्व विदित है कि चन्द्र लोक सूर्य से ही प्रकाशित होता है, पृथिवी भी सूर्य से प्रकाशित होता है। पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसका जो भाग सूर्य के सामने आता है वहां दिन होता है और जितना पृष्ठ या आड़ में होता है, वहां रात होती है। स्वामी दयानन्द लिखते हैं—"एक एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे सब प्रकाश्य है"। इस सृष्टि में न जाने कितने ब्रह्माण्ड हैं और न जाने कितने सूर्य!! "जो लोग कहते हैं कि सूर्य घूमता और पृथिवी नहीं घूमती वे सब अज्ञ हैं" सूर्य का एक नाम बुध्नः है। यह पृथिवी से लाख गुना बड़ा और करोड़ों कोश दूर है। जैसे राई के चारों ओर पहाड़ घूमे, ऐसी बात असम्भव और व्यर्थ है, इसी प्रकार सूर्य पृथिवी के चारों ओर घूमे यह कल्पना भी अमान्य है। "पृथिवी घूमने से ही दिन रात होते हैं सूर्य के घूमने से नहीं"।

स्वामी दयानन्द ने जैनियों की इस कल्पना को अयुक्त ठहराया है जो मानते हैं कि पृथिवी घूमती नहीं किन्तु नीचे नीचे चली जाती है, और जो मानते हैं कि दो सूर्य और दो चन्द्र हैं। स्वामी दयानन्द का कहना है कि एक भूमि के पास एक चन्द्र और अनेक चन्द्र और अनेक भूमियों (अनेक ग्रहों) के मध्य में एक सूर्य है।

समस्त सृष्टि में परमात्मा के एक से नियमों की व्यवस्था है, सृष्टि का विज्ञान सर्वत्र एक है, क्योंकि प्रभु का ही सर्वत्र शासन और अनुशासन है। यह सृष्टि विज्ञान ही वेद है, अतः यह वेदज्ञान समस्त सृष्टि के लिए एक ही है, अलग-अलग नहीं।

Scanned with CamScanner

सृष्टि रचना का काल

महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति और सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि रचना का काल दिया है। संक्षेप में यह विवरण इस प्रकार है—सृष्टि के समस्त काल को मन्वन्तरों में विभाजित किया गया है। पूरी आयु 14 मन्वन्तरों की है। सातवाँ मन्वन्तर इस समय चल रहा है। 1. स्वायम्भव, 2 स्वारोचिष 3. औत्तमि, 4. तामस, 5. रैवत, 6. चाक्षुष, 7. वैवस्वत (आज हम इस सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में है)।

प्रत्येक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगी होती हैं। जिनके 30 करोड़ 67 लाख 20 हजार वर्ष होते हैं। बीते हुए 6 मन्वन्तरों का काल = 1840320000 जो सातवाँ मन्वन्तर इस समय चल रहा है उसमें अब तक 27 चतुर्युगियाँ बीत चली हैं— अर्थात् 4320000 × 27 वर्ष = 116640000 वर्ष। 28 वीं चतुर्युगी के सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गए 3888000 वर्ष, और कलियुग के 4977 वष बीते हैं (सवत् 1933 वें में) अतः पूरी आयु अब तक हुई—

6 मन्वन्तर	=	1840320000
सातवें मन्वन्तर की 27 चतुर्युगियाँ	=	116640000
सत्ययुग से द्वापर तक	=	3888000
कलियुग के	=	4977
		1,96,0852977

यह गणना संवत् 1933 विक्रमी की है (स्वामी दयानन्द के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संवत् की)। आजकल (सन् 1981 ई.) में संवत् 2038 वि. है, अतः सृष्टिकाल में 105

Scanned with CamScanner

वर्ष जोड़ने चाहिए। अतः इस सरल गणना के अनुसार 1981 ई. में सृष्टिकाल 1960853082 (एक अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 82 वर्ष) होना चाहिए।

कुछ आचार्यों के मत से प्रत्येक दो मन्वन्तरों के बीच में एक सन्धिकाल और जोड़ना चाहिए। उन्हें भी अगर हम सृष्टि की आयु में और जोड़ दें तो 1981 ई. (2038 वि.) में सृष्टि की आयु = 1960853082 + 12096000 = 1972949082 वर्ष अर्थात् 1 अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हजार 82 वर्ष हुई। सृष्टि की सम्पूर्ण आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की मानी जाती है, अतः पृथिवी प्रलय होने में अभी 2347050918 (दो अरब 34 करोड़ 70 लाख 50 हजार नौ सौ अठारह) वर्ष शेष हैं।

हम आधुनिक वैज्ञानिक लोग 1 अरब 97 करोड़ वर्ष हों या 1 अरब 96 करोड़ वर्ष, इन दोनों के अन्तर को नगण्य मानते हैं। हमारे ऐसे अनुमानों में 5-10 प्रतिशत का अन्तर कोई अन्तर नहीं माना जाता। साधारण शब्दों में हम इतना कहकर ही सन्तोष कर लेंगे कि पृथिवी को बने दो अरब के लगभग वर्ष हो गये और पृथिवी अभी दो अरब वर्ष और बनी रहेगी। पर यह स्मरण रखना चाहिए कि यह आयु मनुष्य के अवतरण की या वेद के आविर्भाव की आयु नहीं है।

सौर परिवार की आयु

पृथिवी सौर-परिवार की एक सदस्या है। इसे हम सूर्य की पुत्री कह सकते हैं, बुध, मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि आदि ग्रह इसके अन्य भाई हैं। पृथिवी की आयु कितनी है, यह जानना आसान काम नहीं है। वैज्ञानिकों ने पृथिवी की आयु

Scanned with CamScanner

निर्धारित करने की पद्धतियाँ सुझायीं और तरह-तरह अनुमान लगाये। वे एक करोड़, दस करोड़ इस प्रकार के वर्षों की बातें करने लगे। जब से रेडियो एक्टिविटी (radio-activity) को युग का उदय हुआ, तब से पृथिवी की आयु निकालने की एक और पद्धति हमारे हाथ में आ गयी। इस पद्धति में अब निश्चय पूर्वक प्रमाणित कर दिया है, कि पृथिवी और उनके परिवार की आयु चार से पांच अरब वर्ष के बीच की है।

इस विधि द्वारा गणना कैसे की जाती है, इसका विस्तार देना यहाँ सम्भव नहीं है। पृथिवी के गर्भ में रेडियो एक्टिव तत्त्व हैं, जो धीरे-धीरे स्वतः टूटते रहते हैं। उनसे जो तत्त्व बनते हैं उनमें सीसा (लेड, 206 या 207 या 208 समस्थानिक) प्रमुख हैं, और साथ-साथ हीलियम गैस भी बनती है। इनके क्षय होने का अर्ध-जीवन काल (Half-Life) भी ज्ञात है, अर्थात् कितने वर्षों में टूट कर आधी मात्रा शेष रह जाएगी। उदाहरण के लिए यूरेनियम-23845.10 लाख वर्ष में टूट कर आधा समाप्त हो जाएगा और इसके नाभिक विखण्डन से लेड-206 और हीलियम मिलेगा। इस प्रकार विखण्डित होने वाले तत्त्वों का अनुमान लगाया जा सकता है।

किसी प्राचीन शिला या प्रस्तर में इस समय यूरेनियम 238 और हीलियम गैस (अथवा लेड-206) का क्या अनुपात है, यह मालूम हो जाय तो हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि उस शिला में यूरेनियम 238 कितने वर्षों से विद्यमान है। 1913 में लार्ड रथरफोर्ड और उसके एक सहयोगी बर्ट्रम बोल्टवुड (Rutherford and Bertram Boltwood) ने एक शिला में हीलियम और यूरेनियम की मात्राओं का

Scanned with CamScanner

अनुपात मालूम करके घोषित किया था कि यह शिला 70 करोड़ वर्ष पुरानी है।

इस विषय का अधिक विवरण इस छोटी पुस्तिका में देना उपयुक्त नहीं होगा किन्तु केलिफोर्निया इन्स्टीट्यूट के भूगर्भ रसायन शास्त्र के प्रोफेसर हेरिसन ब्राउन ने Life Sciences (Scientific American Resource Library, April 1957, Vol. 06, No. 4 pp. 80—94) में जो लेख दिया है, उसके नीचे लिखे सारांश से सौर-परिवार की आयु का वैज्ञानिक आधार स्पष्ट हो जायेगा।

जितनी भी साक्षियाँ हमारे पास इस समय विद्यमान हैं, उनसे स्पष्ट पता चलता है कि सौर-परिवार की आयु 4-5 अरब वर्ष की है। जिस द्रव्य से सौर-परिवार के पिण्ड बने हैं, वे कितने वर्ष के हैं, अर्थात् उनकी आयु कितनी है, यह विषय भी ज्ञातव्य है। हम जानते हैं कि इन रासायनिक तत्त्वों की, भी एक निश्चित आयु होगी और यह आयु रेडियम-धर्म तत्त्वों की अर्ध जीवन आयु से बहुत भिन्न न होगी अन्यथा ये तत्त्व अब तक विलुप्त ही हो गए होते। यूरेनियम और लेड के पारस्परिक अनुपात पर विचार करते हुए यह प्रतीत होता है कि इन तत्त्वों की आयु लगभग 6 अरब वर्ष की होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि सौर-परिवार की आयु से ये 15 अरब वर्ष और पुराने होंगे।

पृथिवी पर मनुष्य की साक्षी

आधुनिक विचारधारा के अनुसार यह अनुमान लगाया जाता है कि सौर-परिवार की आयु 4-5 अरब वर्ष है। यह

Scanned with CamScanner

आयु पृथिवी की भी है, और पृथिवी से छिटके चन्द्र की भी। हमारी कल्पनाओं में 40-50 करोड़ वर्ष का अन्तर कोई अन्तर नहीं माना जाता। इस पृथिवी पर मनुष्य ऐसा प्राणी कब अवतरित हुआ ? इस सम्बन्ध में हम केवल इतना ही कह सकते है कि मनुष्य का प्रादुर्भाव वनस्पतियों और पशुओं के बाद ही हुआ होगा। प्राचीनतम घोड़े ऐसा कोई पशु 4 करोड़ वर्ष पुराना हो सकता है, मछलियाँ 30 करोड़ वर्ष पुरानी हो सकती हैं। 10 करोड़ वर्ष पुराने टिनोंसौरों के अवशेष मिले हैं। मनुष्य का पुराने से पुराना अवशेष 10-20 लाख वर्ष का है (जावा-मानव, पेकिन-मानव, और हाल का पूर्वी अफ्रीका का टैंज़ानिया का मानव, जो 20 लाख वर्ष पुराना है)। इसी पूर्वी अफ्रीका के चलने-फिरने वाले पुरुष के पैरों की अंगुलियों की परीक्षा करके ज़ॉन नेपियर ने एक लेख में (अप्रेल 1967), The Antiquity of Human Walking Scientific American, April 1967, (Vol. 216, No. 4, pp, 56-66) घोषित किया था कि दस लाख वर्ष पूर्वी अफ्रीका में ऐसा जन्तु था, पैरों की बनावट और अपनी चाल में वस्तुतः मनुष्य ही था—प्रोफेसर लोको ने OLDU VAL GORGE, टैंज़ानिया में जो अत्यन्त प्राचीन मानव अस्थिपिंजर प्राप्त किया है वह 15-20 लाख वर्ष पुराना है। यह जावा और पेकिन मानव से भी पुराना है। इस धरती पर सम्भवतः मानव का अवतरण 50 लाख वर्ष पहले का तो माना ही जा सकता है।

सृष्टि रचना और सृष्टि रचयिता के सम्बन्ध में महर्षि यानन्द के निम्न वाक्य महत्त्व के हैं, उनको उद्धृत करके हम इस प्रकरण का उपसंहार करेंगे।

Scanned with CamScanner

1. जैसे इस देश में अथवा (पृथिवी पर) चीनी, हबशी और आर्यावर्त्त एवं यूरोप में अवयव और रंगरूप आकृति का भी थोड़ा-थोड़ा भेद होता है, इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों में भी भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है, वैसी ही जाति की सृष्टि अन्य लोगों में भी है। जिस-जिस शरीर के प्रदेश में नेत्रादि अंग हैं, उसी-उसी प्रदेश में लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं।

2. जैसे एक राजा का राज्यव्यवस्था नीति सब देशों में समान होती हैं, उसी प्रकार परमात्मा राजराजेश्वर की वेदोक्त नीति अपने सृष्टि रूप सब राज्य में एक सी है।

3. जैसे राजा के आधीन प्रजा होती है वैसे ही परमेश्वर के आधीन जीव और जड़ पदार्थ हैं।

4. जीव कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु कर्मों के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र हैं। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर सृष्टि, संहार और पालन सब विश्व का कर्त्ता है।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

—o—

आचार्य धर्मधर आर्य

सम्पर्क- 9029421718.

Scanned with CamScanner

आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

शिक्षाविद प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1. देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन—मूल्य 0.50 पैसे
2. हमारी राष्ट्रीयता का आधार—मूल्य रु. 1.00
3. विद्यार्थियों के लिए आचार संहिता—मूल्य रु. 1.00
4. दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु. 75.00
5. आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं—मूल्य 50.00 रु.
6. मेरी तीसरी विदेश यात्रा—रु. 6.00
7. द आर्यसमाज (अंग्रेजी)—रु. 2.00

दयानन्द शोधपीठ के प्रकाशन

1. दयानन्द कथा संग्रह—मूल्य रु. 3.00
2. महर्षि दयानन्द : पत्रों के दर्पण में—मूल्य रु. 50.00
3. सार्वभौम वैदिक धर्म—मूल्य रु. 250

अन्य प्रकाशन

1. धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु. 60.00
2. परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु. 12.00
3. आर्यसमाज (हिन्दी)—मूल्य सजिल्द रु. 20.00 अजिल्द रु. 16.00

   ले. लाला लाजपतराय
4. सांस्कृतिक कार्यक्रम पथ दर्शिका—मूल्य रु. 30.00

Scanned with CamScanner

ओ३म्

आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायाकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वाव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिये।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10. सब मनुष्यों को समाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतन्त्र रहें।

Scanned with CamScanner